

चि० श्री....केँ शुभाशीष ।

आइ एक विशेष प्रयोजनसँ ई पत्र लिखि रहल छी । हम जे किछु निर्णय कयलहुँ अछि, हिन्दू धर्मशास्त्र एकर सर्वथा विरुद्ध अछि । एहि कृत्यकेँ सभसँ पैघ पाप मानने अछि । ई बात हम नीक जकाँ जनैत छी । गत पाँच माससँ एहि प्रसंग विचार-मन्थन करैत अयलहुँ । यदि से नहि रहैत, हम धर्मशास्त्रक एहि तथ्यसँ अनभिज्ञ रहितहुँ अथवा हिन्दू धर्मग्रन्थपर अविश्वास रहैत, अपन पूज्य द्वारा प्रतिपादित विचारक प्रति अनास्था रहैत तँ ई पत्र आइसँ पाँच मास पूर्व अहाँकेँ हस्तगत भेल रहैत । किन्तु रक्तमे हिन्दूक संस्कार प्रवाहित होइत रहल अछि आ सँह एतेक दिन धरि चिन्तन करवाक हेतु बाध्य कयने रहल आ एहि पत्रमे एतेक विलम्ब भेल ।

एतेक फड़िछाक लिखवाक तात्पर्य ई जे अहाँ ई नहि सोचि ली जे हम कोनो मानसिक आवेगमे आबि बिनु किछु सोचने-विचारने किछु निर्णय कऽ ललहुँ अछि । तखन एतबा अवश्य जे एक बेर निर्णय कऽ लेलहुँ ताहिमे कोनो परिवर्तन नहि होबऽ जा रहल अछि । यावत् ई पत्र अहाँकेँ हस्तगत होयत गऽ तावत् हम अपन लक्ष्यकेँ बिन्दु कऽ चुकल रहब । तँ एहि पत्रमे कयल संकेतक अनुसारे भविष्यमे कार्य कर्तव्य ।

अहाँक मोनमे उत्सुकता अवश्य होयत जे कोन एहन समस्या उत्पन्न भेलैक जकर समाधान आन तरहेँ सम्भव नहि छलैक । कठिनसँ कठिन परिस्थितिसँ संघर्ष कऽ मनुक्ख अपनाकेँ विपत्तिसँ मुक्त कऽ लैत अछि । तेहना स्थितिमे हमरा सन संघर्षशील प्राणी अपन पराजय स्वीकार कऽ लेलक आ प्रतिक्रियास्वरूप आत्महत्याक आश्रय धयलक, ई घटना अहाँक हेतु नहि हमरा परिचयक जे परिधि अछि ताहि अन्तगत अर्थनिहार समाजक लोकक हेतु विस्मयकारी होयतैक, किन्तु घटना घटित भऽ चुकल, एहि पत्रकेँ पढ़ैत काल सँह बूझल जयवाक चाही ।

लोक धुआँसँ आगिक अनुमान करैत अछि, किन्तु हमरा जीवनक यैह विशेषता रहल जे हम धुआँ पर्यन्तकेँ बाहर नहि होबऽ देलैक । तँ हमरा अन्तरमे धक्कैत आगिक पता ककरो छलैक नहि ।

गण्य कथला उत्तर, ऊपरसँ देवता उत्तर, दैनन्दिन कार्य-प्रणाली ओ उत्तरदायित्वक निर्वाह आदिकेँ देखिकऽ क्यो अटकरो नहि लगा सकैत छल जे हमरा जीवनक बीच एक एहन वैषम्य अछि जाहि ज्वालामे भितरे-भीतर हमर मन प्राण जरि रहल अछि, पजरि रहल अछि । किन्तु जाहि विषमताक संग हमरा संघर्ष होइत आबि रहल छल तकरा पराभूत करब साधारण जन-साध्य नहि छल । हमर अनुमान अछि जे आन एहि स्थितिमे बरखो दू बरख नहि खेपि सकैत । हम तँ तेसर युगकेँ अर्थात् बारह तीया छत्तीस वर्षक अश्विन-पशुन बितौलहुँ ।

अहाँ कहि सकैत छी जे विलम्बोसँ सही, मृदा धैर्य तँ अहाँ नहि राखि सकलहुँ । साधारण लोक जे अगुताकऽ कऽ बैसैत सँह अहाँ किछु विलम्ब कऽ कयलहुँ ।

अहाँ ईहो कहि सकैत छी जे आत्महत्या तँ पलायनवाद थिक । ई कायरक काज थिकैक । हम कायरो भऽ सकैत छी, से शंका अहाँक मोनमे कहियो ने भेल होयत ।

ई बूझि राखू जे आत्महत्यामे जाहि साहसक ओ वीरताक प्रयोजन छैक से दोसराक हत्या करबामे नहि, किन्तु हम अपन वीरता प्रदर्शित करवाक हेतु आत्महत्या कऽ नहि जा रहल छी । एकरा पलायनवाद हमहूँ स्वीकार करैत छी, किन्तु एहन निर्णय करबासँ पूर्व धरि हमर अन्तर्द्वन्द्व की दुर्दशा कथलक अछि तकर वर्णन शब्दक सीमासँ बाहर अछि ।

यदि हम अपन परिस्थितिसँ अवगत करा देब तँ हमरा विश्वास अछि जे हमर कथल निर्णयसँ अहाँ सहमत भऽ जायब । यैह कारण अछि जे जकरा आइ धरि हम रहस्य बनौने रहलहुँ तकर उद्घाटन अहाँक समक्ष कऽ रहल

आत्महत्याक पूर्व

● श्री चन्द्रबाबू मिश्र 'अमर' ●

छी । ई अहाँकेँ नीक जकाँ बूझल अछि जे हम समाजमे चिन्हार लोक छी । हमर ई रहस्य ने जानि कोन रूप धारण कऽ लेअय आ भविष्यमे हमर व्यक्तित्व विवादास्पद बनि जाय, तँ एहि रहस्यक उद्घाटन व्यक्तिगत रूपेँ अहाँक लग कऽ रहल छी, एकरा सार्वजनिक उद्घोष नहि बूझि लेब । अहाँ एकर गोपनीयताकेँ सुरक्षित राखब ।

अहाँकेँ भऽ सकैत अछि जे मृत्युक उपरान्त ई रहस्य रहस्य बनल रहय अथवा एकरा प्रचारमे डंका बाजि जाइक ताहिसँ मुद्दनहारकेँ प्रयोजन की । अथवा अहाँ ईहो सोचि सकैत छी जे, जे आइ धरि गोपनीय बनल रहल तकर उद्घाटन मरवाक समयमे करवाक की प्रयोजन । किन्तु अहाँकेँ ईहो सोचक चाही जे एकरा पाछाँ अवश्य कोनो तेहन कारण होयतैक जे हमरा एकर उद्घाटन करवाक हेतु बाध्य कयने होयत ।

एहि संग अहाँ ईहो बूझि लियऽ जे जाहि रहस्यकेँ हम जीवन भरि अनु-दघाटित रखलहुँ तकरा अहाँक लग उद्घाटित करवाक पाछाँ सेहो कोनो पैघ कारण होयतैक । ओहि कारणकेँ जानि लेला उत्तर अहाँकेँ हमरा प्रति की कर्तव्य होयत से अहाँ जानि सकब ।

हमर विश्वास अछि जे एकर गोपनीयता एक मात्र अहीं अक्षुण्ण राखि सकब । यैह विश्वास अहाँक लग एहि रहस्यक उद्घाटन करवाक प्रेरणा देलक । हम जे उत्तरदायित्व अहाँपर थोपने जाइत छी तकर निर्वाह अहाँ करब अथवा नहि से तँ अहाँक विवेकपर निर्भर अछि, किन्तु अहाँ निर्वाह नहि करब से आशंका हमरा तिलमात्रो नहि भेल आ तँ खुइचा छोडाकऽ सभ बात अहाँक समक्ष राखि रहल छी । शास्त्र कहैत छैक, विश्वासः फलदायकः, आ हम अहाँक प्रति एहन दृढ़ विश्वास रखैत छी तँ निश्चित रूपमे अहाँक भीतर जे एक टा मनुक्ख अछि तकर विवेक जगब करतैक आ ओ अहाँसँ अपन उत्तरदायित्वक निर्वाह करयबे करत, हमर विश्वासो फलीभूत होयबे करत ।

आब अहाँ धबड़ा उठल होयब जे कोन उत्तरदायित्वक निर्वाह अहाँकेँ करऽ पड़ैत, कोन भार कपारपर लादल जायत, किन्तु एतबा धरि बूझि लियऽ जे कोनो आर्थिक भार अहाँपर नहि देबऽ जा रहल छी । अर्थक सम्बन्धमे 'योऽर्थं शुचिः सहिं शुचिः न मृद्वारि शुचिः शुचिः' अर्थात् अर्थक प्रसंग जे व्यवहारमे पवित्र अछि सँह पवित्र अछि, माटि आ पानिसँ पवित्रता कोनो पवित्रता नहि, यैह हमर आदर्श रहल अछि । तँ जकर जे किछु बाँकी बकियौता छलैक से पाइ-पाइ कऽ हम सभक दऽ देने छिएक । अहाँकेँ हमर कथल ऋण परिशोध नहि करऽ पड़ैत ।

हम अपना परिवारक भरण-पोषणक भार सेहो अहाँपर नहि लाद जा रहल छी । यद्यपि हमर अन्धविश्वास रहल जे जन्म माय-बाप दैत छैक, भोग तँ अपना कर्मक लोककेँ करऽ पड़ैत छैक आ जे विधाता मुँह चिरने रहैत छथिन से तकर चिन्तो रखैत छथिन । तथापि ततबा सम्पत्ति हम छोड़ने जा रहल छी जकरा पूजी बना लेल जाय तँ हमरा सन छोटछोत परिवारक गुजरमे कोनो बाधा नहि होयतैक । प्रयोजन एतबे छैक जे ओरिया-ओरिया कऽ ओकर उपभोग होइक तँ एहि परिवारक प्रालनमे विघटन नहि होयतैक, एक टा परिवार नोक जकाँ पालित भऽ सकैत छैक, किन्तु ओ पूजीमे हाथ लगा देल जयतैक तखन ने जानि भविष्य की होयतैक ।

अहाँकेँ हम अपन अप्रकाशित कृति सभकेँ प्रकाशित करवाक भार सेहो नहि देबऽ जा रहलहुँ अछि । यदि समाजकेँ हमरा कृतिमे प्रतिपादित दिचार उपादेश बूझना जयतैक तँ स्वतः अप्रकाशित कृति क जिज्ञासा होयबे कर्तैक

आ तखन 'उत्पत्त्यते च मम कोऽपि समान धर्मा जकरा द्वारा ओहो सभ प्रकाशमे आविये जायत ।

आब हम ओहि कारणसँ अहाँकेँ अवगत करयबासँपूर्व जे उत्तरदायित्व अहाँपर थोप जा रहल छी ताहिसँ अवगत करा दैत छी । अहाँकेँ मात्र दू गोटा कार्य हमर सम्पादित करऽ पड़त । प्रथम तँ ई जे हमर मृत्यु स्वाभाविक रूपे हृदयक गति अवरुद्ध भऽ गेलाक कारण भऽ गेल से समाचार पत्र द्वारा घोषित कऽ देबऽ पड़त । हम दस हजारक जीवन-बीमा करा चुकल छी । यदि आत्महत्याक रहस्य खूजि गेल तँ ओ राशि हमरा परिवारकेँ उपलब्ध नहि भऽ सकैत ।

दोसर भार ई देबऽ जा रहल छी जे ओ र शि उपलब्ध कऽ एहि अब ध नेनाके उच्च शिक्षा धरि पहुँचयबाक उत्तरदायित्व अहाँकेँ उठबऽ पड़त । जीवन बीमामे एही कार्यक हेतु एहि राशिक व्यय करवाक शक्त लिखल छैक । ते आन तरहेँ एकर व्यय करवाक हेतु अहाँकेँ क्यो बाध्य नहि कऽ सकैत अछि । ओना, पारिवारिक स्थिति एहन अछि जे एहि कायमे अनेक विघ्न-बाधा उपस्थित कयल जाय, किन्तु अहाँ सन विश्वासी लोकपर ई भार सौपब एही हेतु हमरा आवश्यक बुझना गेल ।

एतेक कहलाक बादो अहाँकेँ उत्सुकता बनले होयत जे आत्महत्याक आश्रय ग्रहण करवाक हेतु हमरा बाध्य किएक होबऽ पड़ल । तँ सेहो सुनिये लियऽ ।

आना सभक धर्मशास्त्रमे पत्नीकेँ जीवनसंगिनी नहि, अर्द्धाङ्गिनी कहल गेलैक अछि—'जय अवपुष जयति अवनारी' आ जँ ककरो अर्द्धङ्ग भऽ जाइक तँ घिसियोड़ कटैत जीवन वितयबासँ नीक मरणकेँ बूझत । हमरो स्थिति सँह भऽ गेल छल । हमरा पत्नीकेँ हमरा प्रति अखण्ड अविश्वास । एकरा दुर्योग कही अथवा दैवी विडम्बना, मुदा सत्य यह थिक जे एहन प्रतिकूल सचिक समन्वय असम्भव छल ।

यदि हमरा कम नोन खयबाक अस्मास तँ हुनका बेसी, हमरा यदि मेरिवाइ नापसिन्न तँ ओ विनु मेरिवाइकेँ किछु नहि रहन्तीह । हमरा जँ हरियर रंग पसिन्न तँ हुनका लाल । हम धीया-पूतकेँ मारबाक घोर विरोधी तँ हुनका हाथेँ विनु दू चाट खाने कहियो कोनो नेना नहि रहि सकैछ । हमरा यदि अतिथि-प्रभ्यागतक स्वागत-उत्कार करवामे सचि तँ ओ ओहि दिन अट्टाबजर खाता देखि । हमर इच्छा जे, जहाँ धरि भऽ सकय, तन-मन-धनसँ आकर उपकारे कऽ दिएको तँ ओ आकारे करवाक यत्नमे लागल । एतबे नहि, जँ कदाच पता लागि गेलनि जे आइ ककरो उपकार भऽ गेलैक अछि तँ सात दिन धरि हनहन-गटपट ।

एहन मनुक्खक संग यदि पैतृस छत्तीस वर्ष जीवन यापन कऽ गेलहुँ तँ ताहीसँ हमर सङ्गशीलताक अनुमान क्यो कऽ सकैत अछि । एहि अवधिमे जतबा व्यंग्यवाणसँ हमर शरीर ओ आत्मा बिद्ध भेल अछि, यदि भीष्म रहितहुँ तँ लोक हमरो शरशय्यापर पड़ल देखैत । भीष्मकेँ तँ शारीरिक वेदना मात्र होइत छल होयतनि, ओहि संग मानसिक शान्तिक अनुभव करैत छल होयताह जे धराशायी भऽ गेलाक बाद अन्यायीक पक्ष लऽकऽ आब लऽ तँ नहि पड़त, किन्तु हम तँ मानसिक यन्त्रणासँ छटपटाइत रहलहुँ ।

एहि प्रकारक प्रतिकूल स्वभावक लोकक संग जीवन-गाड़ीकेँ घिचबामे कोन कठिनाता होइत छैक से पेट्रोलसँ चलनिहार सवारीपर यात्रा कयनिहार नहि बूझि सकैत अछि । सभसँ अधिक शान्ति ओ विश्राम लोककेँ अपना घरमे आविकऽ होइत छैक, किन्तु दिन भरि कोलहुँ पेरलाक बाद थकल-ठेहिआयल घर आवय आ ओतऽ व्यंग्यवाणक वर्षा आरम्भ भऽ जाइक तँ ओकर जीवन केहन नारकीय भऽ जयतैक से सहजहिँ बूझल जा सकैछ, मुदा हम एकरा विधिक विधान बूझि अडैजि लेने छलहुँ आ तँ एतेक दीर्घ अवधिकेँ पार कऽ गेलहुँ, क्यो एहि विषमताक गन्ध मात्र नहि बूझि सकल ।

मनुक्ख अन्तमे मनुक्खे थिक से नहि कहल जा सकैत अछि । ओ देव १ भऽ जाइत अछि आ पिशाचो । काम-क्रोध आदि मनोविकारपर विजय पाबि लेब साधारण बात नहि । हम कोनो महात्मा नहि छलहुँ । एकर अर्थ ईहो नहि जे हम भावावेशमे विवेककेँ ताखपर राखि देनिहार लोक छलहुँ ।

किन्तु, किन्तु एम्हर पाँच-छो माससँ जे वैषम्य बढ़ल से अत्यन्त विस्मय-कारी छल । ओ हमर सहनशक्तिक अतिक्रमण कऽ देलक आ हमरा एहि निर्णयपर पहुँचऽ पड़ल ।

अहाँकेँ देखल होयत आ सुनलो होयत । करुणा एक प्रतिभामयी नारी, नहि, किशोरी, जे यौवनक कुआरिपर एखन पयर रखबे कयलक अछि, हम ओकर दुइगोट रचना अपना पत्रमे छपलिकेँ । एक निबन्ध आ एक कविता । हमरा व्यक्तिगत परिचय नहि छल ।

एक दिन ओ हमरा कार्यालयमे आयल ई जिज्ञासा करैत जे आकाश-वाणीमे लोककेँ कार्यक्रम कोना भेटैत छैक । हम ओकरा डेरापर आबऽ कहलिकेँ ओकर स्वर-परीक्षा करवाक हेतु । ओ यथासमय अयबो कयल । हम अपन पत्नी ओ अपना कन्याकेँ सेहो बजा लेलिकेँ । पहिने तँ करुणा सकुचाइल, मुदा जखन कविता पढ़ऽ लागल तँ नामक अनुरूपे ओकरा स्वरसँ करुणाक धारा प्रवाहित होबऽ लगलैक ।

हम आकाशवाणीक अधिकारीकेँ ओकरा कार्यक्रम देवाक अनुरोध कयलियनि आ ओ मानियो गेलाह । कार्यक्रम प्रसारितो भेलैक । हम अपना कोठलीमे बैसल कार्यक्रम सुनैत रही । मोनमे आयल जे करुणा हमर बेटी रहैत तँ एहि दिशामे एकर पूर्ण विकासक प्रबन्ध हम कऽ दितिकेँ । ओही कालमे हमर पत्नी सेहो हमरा कोठलीमे अयलीह आ कहलनि जे ई तँ ओही शिक छुछनरियाक गीत बूझि पड़ैत अछि । हमहुनक एहि उक्तिक प्रतिवाद कयलियनि । दोसर दिन भरि टोलमे एकर चर्चा पसरि गेल जे हमरा करुणाक संग अनुचित सम्बन्ध स्थापित भऽ गेल अछि ।

अहाँकेँ नीक जकाँ ज्ञात अछि जे चरित्रे हमर बल, हमर सम्पत्ति ओ हमर एश्वर्य रहल अछि, किन्तु ताहि चरित्रकेँ दूषित करवाक प्रयास कयल गेल । अनका द्वारा नहि, हमर अपन अर्द्धाङ्गिनी द्वारा । आनक बातपर किछु काल अविश्वासो कयल जा सकैत छलैक किन्तु यदि स्वयं पत्नी एहि प्रकारक आरोप कऽ दैक तँ जेना भरद्वाज मुनिकेँ सेहो रामवनगमनमे भरतक सहमतिक भ्रम भऽ गेल छनि तहिना समाजक विवेकशीलो लोककेँ भ्रम भऽ जा सकैत छैक ।

हम जकरा प्रति अपन सन्तानक भाव रखैत अयलहुँ तकरा प्रति हमर अनुचित सम्बन्धक अपवाद हमरा अन्तरकेँ आलोड़ित विलोड़ित कऽ देलक ।

मनुक्ख अन्तमे मनुक्खे थिक से नहि कहल जा सकैत अछि । ओ देवतो भऽ जाइत अछि आ पिशाचो । काम-क्रोध आदि मनोविकारपर विजय पाबि लेब साधारण बात नहि । हम कोनो महात्मा नहि छलहुँ । एकर अर्थ ईहो नहि जे हम भावावेशमे विवेककेँ ताखपर राखि देनिहार लोक छलहुँ ।

किन्तु एक टा क्षण अयलैक जे हमरा विवेककेँ भ्रष्ट कऽ देलक । 'सम्भावितस्य चाकीर्त्तिर्मरणादतिरिच्यते' तँ हमरा एहि निष्कर्षपर पहुँचऽ पड़ल ।

कोनो तेहन अलौकिक प्रतिभासम्पन्न लोक हम नहि छलहुँ जे देशकेँ, समाजकेँ हमरा मुइने कोनो क्षति भऽ जयतैक । हानि होयतैक एक मात्र एहि अबोध नेनाक, जकरा भविष्यक प्रति हम बड़ आशान्वित छलहुँ । तँ ई भार अहाँपर एक दृढ़ विश्वासक संग सौपि हम विश्वनाथक शरणमे जा रहल छी । यदि कोनो अप्रिय हमरासँ भऽ गेल हो तँ तकरा बिसरि देब । बस ।

अहाँक शुभाकांक्षी—

अमलेन्द्र 'मुमर्षु'

श्याम बाबू गामक पैघ लोक छथि । हुनक छोकब गाम तँ गाम, आली-पालीमे विख्यात छनि । एक दिनक गप्प जे ओ अपन द्वार परक नेना-भुटकाक मास्टरसँ पुछलथिन—मास्टर साहेब । कहूँ तँ चन्द्रमाक ऊपर मेघो छैक ?

—नहि, हमरा जनतवे चन्द्र-मापर मेघ नहि छैक ।

एतबा सुनैत देरी, ओ फुचाकऽ आगि भऽ गेलाह । ओ वजलाह—अयँ ओ, हुन अपन आखिसँ चन्द्रमापर मेघ देखलएक आ अहाँ कहैत छी जे मेघ नहि छैक । अहाँ की पढ़बैत छी वच्चा सभकेँ.....केरा.... लुच्चा नहितन ।

अपराधक दंडमे मास्टरकेँ तखने मोटाचोटा लऽ कऽ भगैत रस्ता नहि भेटलनि ।

श्री चेतन झा, परवाहा, फारविसगंज, पूर्णियाँ ।

बुभी अन्ति

चाँचर चाँचर तो के री
मन्दिर पैखिकऽ देखिजो री
देखलहुँ सुनलहुँ जाय दे री
जे लगोलकौ तकरा आवऽ दही
—माँछक सरैला

तीन अक्षर तिरियाकेँ भाव ।
आदिक मेंटने रनमे धाबय
मध्यक मेंटने सभ क्यो खाय
अन्तक मेंटने पताले जाय
—मूसर

श्री रंजना झा द्वारा—श्री लक्ष्मीनाथ मिश्र, सरस्वती-भवन, कटिहार ।

हारक जीत

बाबा भारती गामसँ बाहर एक छोट मंदिरमे रहैत छलाह । हुनका एक घोड़ा छलनि । घोड़ाकेँ बाबा सुलतान कहि सोर करैत छलाह । बाबा पूजापाठक बाद सभ समय घोड़ाकेँ ताकहेरमे बितबैत छलाह । बाबा नित्य दिन घोड़ापर चढ़ि कऽ आठ दस मील यात्रा करैत छलाह ।

ओही इलाकाक प्रसिद्ध डाकू खड़ग सिंह घोड़ाक बहुत प्रशंसा

सुनने छलाह । डाकू एक दिन घोड़ा देखबाक हेतु बाबाक ओतऽ अग्रलाह । ओ घोड़ाकेँ देखिते चकित भऽ गेलाह । ओ चालिकेँ देखि दंग भऽ बाबासँ कहलकनि—हम डाकू खड़ग सिंह थिकहुँ । हम अहाँक घोड़ाकेँ चोरा कऽ लऽ जायब । ई बात सुनि बाबा राति-राति जागिकऽ घोड़ाक ताकहेर करथिन ।

बहुत दिन बीति गेल तँ बाबा घोड़ापर सवार भऽ दोसर गाम जाइत छलाह । बाटमे एक कंगाल करुणा स्वरमे बाबासँ कहलथिन जे हमरा लगक गाममे घोड़ापर चढ़ा कऽ लऽ चल । बाबाकेँ दया भऽ गेलनि । ओहि कंगालकेँ घोड़ापर चढ़ाकऽ अपने लगाम पकड़िकऽ चलऽ लगलाह । किन्तु दूर गेलापर बाबाकेँ हाथसँ अकस्मात लगाम छूटि गेलनि आ घोड़ा बड़ी वेगसँ आगाँ भागि पड़ा-यल । बाबाकेँ मन पड़लनि जे ई डाकू खड़ग सिंह छल । ओ चिचियाकऽ कहलथिन जे ई घटना ककरोसँ नहि कहबैक किएक तँ ई बात सुनिकऽ मनुष्य सभकेँ कंगाल परसँ विश्वास समाप्त भऽ जयतैक । ई कथन सुनैत डाकू खड़ग सिंह बाबा भारतीकेँ देवता बूझऽ लागल ।

उद्गार

श्री अमरनाथ झा 'अमर'

के अछि धीर एहन एहि युगमे सहत यातना एहन कठोर मरणोन्मुख शय्यागत भ्राता तदपि हाथमे झूला-डोर करुण नयन आप्लावित जलसँ नयनहि सूखऽ खसय न बुन्द राजपतिक गुण गाबि-गाबि निज नयन अटाओल बालमुकुन्द परम प्रेमसँ सजल देखै छी झूलामे शृंगार विशेष नृत्य गान कीर्तनक व्यवस्था मोहि रहल मन हरल कलेश जते जते प्रभु देखै यातना ततबा बढ़ल भक्ति अछि भेल प्रभु पवने जे लीन भेल छथि अपन रूप प्रभु तनिका देल देव अर्चनारत नृप महिषी पितर कर्ममे से छथि दक्ष गया आइ उद्धार पितर कऽ कुलदीपक माडऽ छल लक्ष्य एक प्रार्थना पूर्ण कयल प्रभु दऽ चिरजीवी 'नम्भू' आश देखथु श्रीपति अपन बालकृत आयल अछि वृन्दावन रास अचल भक्ति पुनि घोर तपस्याकेर थिक आइ परीक्षा घोर विविध यातना सहन शक्ति छनि तनिका हित ई कीन कठोर देल परीक्षा सती जानकी अनुसूया दमयन्तीत्यादि ई तँ कथा पुरान सुनै छी एहि युगमे तँ ई छथि आदि श्रील 'राजलक्ष्मी जी' पूज्या राजपतिक जनिका अवलम्ब धैर्य विनय करुणाक मूर्ति छथि मातृरूपमे छथि जगदम्ब

—जे सुगरक पयरमे चारि गोठ पज्जा होइत छैक ।

—जे घोषा सेहो अण्डा दैत छैक ।

—जे 'फ्लैवोवेक्टिन' नामक जीवाणु खोलैत पानिमे सेहो जीविते रहैत अछि । ओकरा जीवित रहबाक हेतु हवाक सेहो नहि कार्य पड़ैत छैक ।

—जे उत्तरी ध्रुवमे छी मासक दिन २१ मार्चसँ प्रारम्भ होइत छैक ।

—जे मूँगा एक गोठ जानवर होइत अछि ।

—जे तारा नामक माछक एक भागकेँ काटि देलापर तुरत ओ भाग जीवित भऽ जाइत छैक ।

—जे आइ धरिक चारि गोठ महानतम तथा मूलभूत आविष्कार क्रमश पहिया, लीवर, फनी आ स्क्रू अछि । सभ यन्त्रक कार्य एही चारूपर आधारित छैक ।

—जे आँकसीजन गैसक आविष्कार "जोसेफ प्रीस्टले" १७७१ ई० मे कयलनि ।

—जे आदमी अधिकसँ अधिक २६० डिग्री फारेनहाइट धरि गरमी सहन कऽ सकैत अछि ।

—जे 'जिराफ' नामक जानवर ठाढ़े-ठाढ़े सूति रहैत अछि ।

—जे चिड़ै सेहो सूनि सकैत अछि आ ओकर कान ओकरा पाँखिक तरफ होइत छैक ।

—जे साँप अपना 'जीह' सँ सभ बस्तुक गन्धकेँ सुँघैत अछि ओ आखिसँ सुनैत अछि ।

—जे क्रोध आ प्रेममे शरीर काँपऽ लगैत छैक । ई तखने होइत छैक जखन मोन एक दिस क्रोध वा प्रेम करऽ चाहैत छैक तथा दोसर दिस ओकर परिणामक प्रति शंकित रहैत छैक ।

—जे फूलक केवल नौ गोठ भेद होइत छैक ।

—जे वनबिलाड़ पशु-पक्षी जगतमे इन्जीनियर'क नामसँ प्रसिद्ध अछि ।

श्री कमलाकान्त झा 'कमल' "टी० एन० एच० ई० स्कूल, कलुआही, दरभंगा ।

रातिक समयमे डाकू चुपचाप मंदिर जाकऽ घोड़ाकेँ अस्तबलमे बाँन्हि देलक । सभ दिन जकाँ बाबा भिनसरमे जगलाह । अस्तबलक लग पहुँचलाह तँ घोड़ा हिनहिनाय लागल । तुरन्त बाबा घोड़ाक लग जाकऽ घोड़ाकेँ गरदनमे लागि गेलाह । एहि प्रकारेँ हारल बाबा मधुर वाणीसँ अन्तमे जितलाह आ घोड़ा पीलनि ।

श्री रामपदार्थ शाह, लोहारपट्टी, मोत्तरी, नेपाल ।

की अहाँ जनैत छी ?

—जे विश्वक सभसँ ऊँच चिड़ै शतुरमुर्ग होइत अछि ।

—जे थर्मामीटरक निर्माता फारेनहाइट नहि छल अपितु गैली-लियो ।

—जे बेतारक तारक मूल आविष्कारक श्री जगदीशचन्द्र बसु छलाह ।

—जे ननमे दू गोठ घातक विष 'सोडियम' ओ 'क्लोरीन' अछि ।

—जे गुलाबक सेन्टक आविष्कार 'नूरजहाँ' कयने छलीह ।

इण्डिकेट-सिण्डिकेट

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

इण्डिकेट-सिण्डिकेट ।

वाम दिस खुरपी दहिन दिस बेट ॥

साप ओ छुछुन्नरिके भऽ गेल भेट ।

अपनेसँ दुनू ममोड़ि लेलनि घेत ॥

अहमद ओ रामकेर भेल एक पेट ।

सम्प्रदायवादक बँचल नहि छेत ॥

पौलनि चौहान जखन चौबिसक रेट ।

बचला देसाइ भाइ चौदह करेट ॥

मन्त्रि-परिषद्-वनमे भेलनि आखेट ।

बड़-बड़ जनपर चललनि चपेट ॥

वाम ओ दहिन छल पहिनहिसँ फेट ।

हाथी पर्यन्त भेला 'आउट आफ डेट' ॥

डाड.केँ टाड.मे लेलनि लपेट ।

संसपाक संग द्रमुक रहला समेट ॥

सुब्रह्मण्यमकेर फराक भेलनि सेट ।

गप्पा जी गति रहला गप्पीकेर गेट ॥

सत्ता परसि देल प्लेटपर प्लेट ।

तखनो लगत करऽ के अबांड लेट ॥

केंद्र मध्य भेल खेल बेस ई क्रिकेट ।

गेन फानि पार गेल इण्डियाक गेट ॥

फानल फिरै अछि तमाम अलगटेट ।

बतह बलेल सेहो बाँटथि बुकलेट ॥

तकर रूप बिना कोनो लाजक कखनो बेला देल जाइत अछि ।

मैथिलीक मध्यमसँ शिक्षा, बच्चा समकै मिथिलांचलमे देल जाय त हि हेतु शिक्षा संहितामे सेहो अवधान छैक । मुदा से भऽ किएक नहि रहल अछि ? सुनल गल छल जे प्राथमिक कक्षा समक हेतु सरकार दिससँ एहि वर्ष मैथिलीयोमे पोषीक प्रकाशन कर ओल जा रहल अछि । मुदा कतऽ अछि ओ पोषीक सभ ??

व त स्पष्ट अछि जे सरकारी यंत्र किछु कहि जनत केँ नुष्ट कऽ समय खेपि लेब क नीति अपनौने अछि ते हमर लोकनिकेँ एह हेतु पूर्ण सचेष्ट भऽ सोचबक चाही ।

हमर लोकनि अपने

हमर लोकनि मंचपर भाषणक क्रममे वा कोनो लक्षक मध्यमसँ खूब परिमजित भाषामे रंग-विरंगक सिद्धान्त छोटि लैत छी, मुदा वस्तविक कार्य दिस ककरा ध्यान नहि जाइत अछि । नव पुरन सभ तरहक षिमे साहित्यक सृजन भऽ रहल अछि । पत्रिका, सप्त हिक, म.सिक, त्रैमसिकक प्रकाशन ठाम-ठामसँ भऽ रहल अछि मुदा ग्राहकक अभावमे सभ कुहरि रहल अछि । यह कारण छैक जे कोनो पूँजीबला व्यक्ति मैथिलीमे दैनिक-पत्र बहार करबक साहस नहि कऽ रहल अछि ।

कलकत्ता, बम्बई, मैनपुरी, राँची जमशेदपुर तथा पटना सँ एम्हर सभ तरहक आवाज उठाओल जाइत अछि मुदा हम की करैत छी ? की मात्र प्रवसी बन्वूलोकनिक कृपापर हमर मैथिलीक उद्धार भऽ सकैत अछि ??

पछिला वर्ष एक शिष्ट-मंडल दरभंगाक जिला शिक्षा पदधिकारीसँ भेंट कऽ मैथिली मध्यमसँ शिक्षा देअबक औचित्य ज्ञापित कयने छलथिन मुदा ओ मुंगेर, पूर्णियाँ, सहरसा, मुजफ्फरपुरक पदधिकारियोंसँ किएक नहि भेंट कयलथिन ? एहि सन्दर्भमे एकटा आरगव कहि देव अग्रासंगिक नहि होयत ।

पछिला दिन विह्र रिसर्च सोसाइटी, पटना मे मैथिली साहित्य संस्थान दिससँ विहारक दू मंत्री सर्वश्री लहटन चौधरी तथा प्रो० श्री न.गेन्द्र झाक अभिनन्दन कयल गेलनि । ओहि अवसरपर हमहूँ ओतऽ उपस्थित छलहुँ । कार्यक्रम बड़ नीक रहल । मुदा तखन जे हम कार्यक्रमक सयोजक श्री र.जेश्वर झाकेँ पुछलियनि जे मिथिलांचलक अर मंत्रीगणकेँ सेहो किएक नहि आमंत्रित कयल गेलनि ? तँ ओ अपन अनभिज्ञता जनौलनि ।

कहबक त.त्यर जे जँ हम एहन कोनो कार्यक्रमक आयोजन करी तँ अपन कहवा योग्य समझाविसँ समेटि लेब क चही । नहि तँ उपेक्षित भाविक हृदयमे आक्रान्त भावन जागि जयतँक अ ओ मैथिली हेतु बड़ अहितकर होयत ।

अब करै हम देखैत छी जे मैथिली-जनक क्रममे किछु लोक दोष आ किछु लोड बक । तँ हमर लोकनिकेँ सेहो आत्म-नरीक्षण कऽ एक भऽ जयबक चाही । ०००

त्रि प दी

: श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' :

एक--

सौसे अतीत जकर तीते व्यतीत भेल
वर्तमान वर्तनमे गलि गलि खसैत छै,
से भविष्यकेर पुनः मधुर कल्पनाक पाँक-
मध्य पथर राखि जानि बूझि कऽ फँसैत अछि ।

जीवनकेर बाट जकर पिच्छड़ रहलैक सदा
आनकेँ खसैत देखि सेहो हँसैत अछि
अपना लग ठाढ़ अपन टेटर नहि देखि सकय
अपने मुँह टेढ़ा मुँह अनकर दुसैत अछि ॥

दू--

कहिकऽ युगधर्म लाज-शर्म लोक तेजि रहल
जानय नहि मर्म आ मर्मज्ञे कहबैत अछि,
खतामे गुड़कुनियाँ गँची ले' मारय से
अनका सिमरिया धरि सोझे नहबैत अछि ।

एक घोट पानि हेतु बाप जकर मुइलथिन से
पितरपच्छ पाबि पितृ-लोककेँ दहबैत अछि
अनका भूदानकेर महिमा सुनौल करय
अपने शमशान ब्रह्मथानो दहबैत अछि ॥

तीन--

शासन बेरोक, अनुशासन-विहीन लोक
भारतीय संस्कृति शीर्षासन करैत अछि,
'रासन' पर जाहि ठाम जनता जीबैत रहय
ताहि ठाम भासन (भाषण)पर उचिते मरैत अछि

बासन हो पँध आ सिंहासन डुरुस्त रहय
ताही ले' डारिपात सभ दल धरैत अछि
फाँटिपर चढ़ैत कते गोटा उपाट मुइल
मुधुआ पछड़त तथा बुधुआ ससरैत अछि ।

विचार मंच

साहस करू, टाकाक व्यवस्था टूट जायत

: डाक्टर श्री सुधाकान्त मिश्र :

मिथिलामे सामान्य रूपेँ बियाह दू तरहें सम्पन्न होइछ—प्रथमतः सौराठ सभासँ ओ दोसर घर कथासँ । नीक वर-घर लेल लोक प्राचीन समयसँ प्रयत्न करैत आयल अछि । जखनसँ हरसिंह देवीक प्रथासँ अपना देशमे पाँजिक बन्धन भेल, तखनसँ प्रायः श्रीकान्त झा, महादेव झा आदि पाँजिवला वा श्रोत्रियवंशी परिवार श्रेष्ठ, कुलीन, धनवान ओ समाजक नाक बुझल जाय लागल । पुनः कालक्रमसँ सन् १९६० सँ सौराठ सभामे 'व्यवस्था' किंवा वर-पक्षकेँ कन्यापक्ष द्वारा टाका पूर्वमे गनयबाक प्रथा घनघोर रूपमे प्रारम्भ भेल अछि । आव १९७० मे खाहे बियाह घर कथासँ हो खाहे सौराठ सभासँ विनु 'व्यवस्था'क बियाह प्रायः नहिये होइछ ।

हमरा एक गोटे किछु दिन पूर्व भेटल रहथि—कहलनि—“एकावन हजार” बौआकेँ दैत छनि ओ “सात हजार”क विदाइ, कह सुधा बाबू—हमरो तँ बेटी अछि ओकरा लेल श्रियुत फल्लाँ बाबू ‘एकतीस हजार’ व्यवस्था ओ ‘पाँच हजार’ टाका विदाइ लेताह । तखन ई कोना कहल जाय जे हम एकावन हजार अन्यायसँ लेब । एहि प्रसंगे किछु दिन पूर्व मैथिली हास्य कथा सम्राट् श्रीयुत् प्रो. हरिमोहन झाजी लिखल गल्प “बौआक दाम” मोन पड़ल । हम हुनका उत्तर देल—तँ एहि सौराठ सभामे अपनै एकावनो हजार टाकासँ अधिकक आशा करैत छी ? ओ मुस्की दः कः कहलनि—“अधिकस्य अधिक” फलम्” जतेक घरि डिमाण्ड हो । बौआक मेडिकल पढ़ाइमे बड़ खर्च भेल अछि, से कोना पूरा होयत ?”

उपरका प्रसंगमे विचारणीय ई नहि जे बेटावलाकेँ आइ कतेक भेटैत छनि—विचारणीय ई जे बेटीवला ओहि बेटावलाकेँ कतेक व्यवस्था दः सकैत छथि । सामान्य रूपेँ हमरा सभक मिथिलांचल दरिद्रे अछि तेँ खेत भरना वा बेचि कः पाँचसँ दस हजार टाका गनल सम्भव होयत किन्तु एकावन हजार वा अधिक टाकाक व्यवस्था करब असामान्य लोक लेल होयत ।

तँ की टाकाक ई राक्षसी लिप्साक अग्निमे हमर सभक कन्या एहिना ओकल जयतीह ? कथमपि नहि । भगवान् श्रीकृष्ण गीतामे कहने छथि—यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ...

तेँ एहि प्रसंग सेहो सूर्योदय भऽ गेल अछि । दू वर्षसँ मिथिला मिहिर, आर्यावर्त प्रभृति पत्र-पत्रिका एवं ग्रन्थालय दरभंगा द्वारा प्रकाशित मैथिली डाइरीमे आदर्श बियाह (विनु टाका गनौने) क सूचना प्रकाशित भेल अछि । हमरा ईहो बुझवामे आयल अछि जे एक अतिकुलीन मुन्निर कन्या अपन स्वामीकेँ टाका गनयबाक कारणेँ चतुर्थी राति कऽ गंजन कयलकनि ओ वर अपन बापसँ विद्रोह कऽ कन्याक पिताकेँ सात हजार टाका आपस कऽ प्रायश्चित्त कयलनि ।

समाज परिवर्तनशील अछि । किछु दिन पूर्व कन्यावला पिता कुलीन भेने अपनासँ छोट जाति-पाँजिमे बियाह कराकऽ टाकाक आमदनी करैत छलाह । आइ वरक पिता राक्षस जकाँ कन्याक बापक घरारी बेचवा कऽ टाका लेवामे नहि हिचकिटाइत छलाह । एक टा हास्यास्पद युक्ति पूर्वमे कहल एकावन हजार वरक पिता देलनि जे लोक जे दू वा अधिक कन्यासँ बियाह करथि तँ नीक होइत । आव स्वतन्त्र भारतमे कानूनन दोसर बियाह करब मना अछि तेँ हुनक ई उक्ति नहि चलल ।

हमरा वरक पितासँ वा वरक गाजियनसँ नहि किछु कहबाक अछि । छागर जकाँ बलि पशु भेल कन्याक पितासँ सेहो किछु कहब अन्याय अछि । हमरा तँ कहबाक अछि स्वयं नवयुवक वर महोदयसँ—सुनू—कि ई नीक लागत जे अहाँक ‘बेटर अपोजिशन’ वा ‘स्वोट-हार्ट’ जीवन पर्यन्त अहाँकेँ टाकासँ कीनल गुलाम बूझैत रहथि—कि अहाँ आधुनिकतासँ पूर्ण राजनीतिसँ विचलित नवयुवक नहि छी—यदि छी तँ सभ काजमे बाप भायक कहल पुरानपंथी भऽ जाइछ—एहि टाकाक व्यवस्थामे कथी लेल अहाँ पूर्ण विद्रोह नहि कऽ पबैत छी । उठू, जागू, देश कालकेँ चीन्हू ! प्रतिज्ञा करू—व्यवस्थावला कथा नहि करब । अहाँ जे विद्रोह करी तँ समाजक (मिथिला-कसेहो) ई कलक समाप्त भऽ जायत । अहाँ अपन पुरुषार्थसँ तीस हजारक स्थानपर तीस लाख कमा लेब—समुक्त धन बिला जायत । अहाँ नीक सहधर्मिणी चुनू—देखि कऽ परबि कऽ—हमरा आपत्ति नहि ! किन्तु एना ने हो जे चतुर्थी राति कन्या धनक गर्व अहाँक अस्तित्वकेँ भसिया देथि ।

हमरा हर्ष अछि जे टाकाक व्यवस्थाक कलंकित बाढ़िमे एहन नवयुवक छथि (आ दिना-नुदिन ई संख्या बढैत) जे विनु टाका आदर्श बियाह करैत छथि वा करवा लेल तैयार छथि । हिनकेसँ कालहुक स्वर्णिम उषाकाल होयत । साहस करू ! नवयुवक गण ! ई नैतिकताक चुनौती अछि—अपन माइक दूधकेँ नहि लजाबी । स्त्रीकेँ त्यागसँ सभ दिन लेल वशमे करू । यँह पुरुषत्व होयत, यँह नव समाज-रचना होयत ।

संसार बदलि रहल अछि । प्रतिक्षण नव घटना होइछ । रोटी रोजीक समस्या मुँह बौने आवि गेल । एहना स्थितिमे ई क्षुद्रता किएक ? मानवतासँ दानवता पराजित होयत । तेँ प्रत्येक विवाहोत्सुक सभागाछीक सजल नवयुवकक हम सादर अभिनन्दन करैत छी जे ओ विनु व्यवस्था लेने बियाह करथि । नहि तँ हुनकामे ओ बरद-हट्टामे बान्हल बड़दमे हमरा कोनो अन्तर नहि बुझायत ।

कन्या वा हुनक पितासँ हमर एक टा निवेदन—कृपया जाति-पाँजि वा पक्का मकान खेतक लोभ नहि करी । दरिद्र वा छोट पाँजिमे नीक नवयुवक भेटथि तँ कथा करी । समाजक सेहो कर्तव्य जे आदर्श बियाह हो, तकर पूर्ण प्रचार हो—फोटो खींचि कऽ समाचारपत्रमे, मिथिला मिहिर, वैदेही, बटुक पत्रादिमे छापल जाय । एहिसँ सतोगुण बढैत ।

विश्वास राखू, टाका गनयबाक पद्धतिक चरमसीमा आवि गेल । आव ई व्यवस्था अवश्ये टूटत । जतेक जल्दी हमर मैथिल नवयुवक साहस करताह ततेक जल्दी ई टूटत । की हम समाजकेँ, देशकेँ बदलक क्षमता रखनिहार मैथिल तह्णसँ ई अपेक्षा करी जे ओ अपन अदम्य साहसक परिचय बियाहसँ पूर्व टाका नहि लऽ देताह ? यदि देताह तँ निश्चय समाजक प्रबुद्ध व्यक्ति हुनक अभिनन्दन करत एवं हुनक हृदयेश्वरी सेहो हुनकासँ अदम्य प्रेम करथिन् । यँह बियाह मन्त्रार्थ पाणिग्रहण होयत ।

‘स्वस्ति श्री बड़का भाइके’ गोड़ लगत छियनि’ दुनु गोटेक पत्र एही ठामसँ आरम्भ होइत छल । भाइ ई वाक्य करुणाक गंगोवी सन प्रतिभासित होइत अछि । भाइसँ तेँस वर्ष पूर्व किसुन जी अर्थात् स्वर्गीय रामकृष्ण झा ‘किसुन’ (एहि नामक संग स्वर्गीय विशेषण लगबैत जाहि मर्यादित वेदनाक अनुभव भऽ रहल अछि तकरा शब्द द्वारा हम की, क्यो व्यक्त करबामे समर्थ नहि भऽ सकैत अछि) हमरा भाइक रूपमे प्राप्त भेलह । पहिल भेंट १९४७ ई० मे मैथिली साहित्य परिषद् द्वारा आयोजित मैथिली परीक्षामे (रमेश्वरलता संस्कृत महाविद्यालय, दरभंगा बेन्द्रसँ) सम्मिलित होयबाक हेतु जखन दरभंगा आयल छलाह, परिषदक उपमन्त्री होयबाक कारणे हम उक्त बेन्द्रक बेन्द्राधीशक छलहुँ, तखन एकदम नाटकीय ढंगे भेल छल जकर उल्लेख ओ स्वयं कतहु कऽ चुकल छथि । मिथिला मिहिरक माध्यमसँ नाम्ना हम एक दोसरसँ पूर्व परिचित छलहुँ । किन्तु जाहि क्षणमे हमरा दुनु गोटेकेँ पहिल पहिल भेंट भेल से आश्चर्यजनक रूपेँ शुभ क्षण छलैक । पहिल भेंटक बाद प्रायः डेढ़ वर्षधरि मात्र पत्राचार होइत रहल किन्तु ओ पत्राचार हमरा दुनु व्यक्तिक सम्बन्धकेँ कमे तेना दृढ़सँ दृढतर बनबैत गेल जे पाछाँ दू शरीर एक प्राण भऽ गेलहुँ ।

हितोपदेशक ई वचन—‘न पातरि न दारेण न सोदर्ये नचात्मजे । निश्वासः तादृशः पुंसां यादृङ्मित्रे स्वभावजे ॥ सर्वथा सत्य प्रतिभासित होइस लागल । एक दिशा, एक उद्देश्य, एक विचारधारा, एक लेखनशैली एवं एक कर्म क्षेत्र रहबाक कारणे एक दोसरक दूरक रहलहुँ । जे कोनो आयोजन हो, भाइक पत्र अथवा करत आ भाइक पत्र आओत तेँ हमरो जाइये पड़त । एहने कोनो अवसर आयल होयत जे भाइ द्वारा आयोजित आयोजनमे हम सम्मिलित नहि भेल होयब ।

सहर्षा जिलाक सम्पूर्ण साहित्यिक एवं राजनीतिक चेतनाक मूर्तिमान एक प्रकाशस्तम्भ । हिन्दी साहित्य सम्मेलन हो अथवा मैथिली साहित्य परिषद, पुस्तकालय आन्दोलन हो अथवा शिक्षक संघक संघटन, पत्रकार संघ हो अथवा संस्कृत भाषाक रक्षा ओ विकासक प्रसंग कोनो विचार, विद्यापति स्मृति पर्व हो अथवा तुलसी-जयन्ती, कवि-सम्मेलन हो अथवा गायक-सम्मेलन, विहार प्रान्तीय शिक्षक सम्मेलन हो अथवा अखिल भारतीय मैथिली लेखक-सम्मेलन, सब ठाम भाइ अपन स्वतन्त्र व्यक्तित्वक संग अपना प्रभाव क्षेत्रमे अनेककेँ समेटने विद्यमान भेटताह । एहि तेँस वर्षक अन्तरालमे कमसँ कम गोटेक सय

मंचपर दुनु भाइ संग भेल होयब । शिक्षक संघक अधिवेशनमे तेँ दरभंगा जिलाक शिक्षक हमरापर ई दोषारोपण करैत रहलाह जे अहाँ तेँ सहर्षा जिलाक प्रतिनिधित्व करैत छी । शिक्षक संघक अधिवेशनमे प्रत्येक जिलाक प्रतिनिधिलोकनिक हेतु पृथक पृथक खण्डमे आवासक व्यवस्था रहैत छनि आ हम जाहि कोनो अधिवेशनमे गेलहुँ आरा, छपरा, पटना, नवादा, कटिहार सब ठाम हमर आवास भाइक संग रहत । संघक राजनीतिमे भाइ हमर नेता । जे भाइ कहथि से हमरा कर्तव्य ।

नीति छँक—‘विद्या ददाति विनयम्’ से वस्तुतः विद्याक प्रसादे विनयताक प्रतिमूर्ति छलाह किसुनजी । एहन कर्मठ, एहन कार्य दक्ष, एहन लौकिकतामे कुशल आ एहि रूपेँ संयत जीवन व्यतीत कयनिहार कठिनतेसँ तकला उत्तर दोसर व्यक्ति भेटि सकताह । भाइक पत्र आयल—अमुक तिथि कऽ अमुक उपलक्ष्यमे अमुक आयोजन करऽ जा रहल छी, दरभंगासँ अमुक गाडीसँ चललाँ उत्तर एतेक नम्बर गाडी समस्तीपुरमे एतेक बजे, मानसीमे एतेक समय भेटतह, एतेक बजे सुपौल वा सहर्षा वा मधेपुरा पहुँचा देतह अर्थात् अविती-जइतीह सम्पूर्ण टाइम टेबुलक उल्लेख करैत कोना कर्मसँ कम समयमे आवि कऽ पुनः अपन कार्यपर घूरि कऽ जा सकैत छी तकर पूर्व व्यवस्था । साधारणतः संस्कृतक विद्वान थोड़ेक व्यावहारिकतामे अपटु बूझल जाइत छथि, हमर भाइ कतसँ एतेक व्यावहारिकताक ज्ञान पाबि सकल छलाह भगवान जानथि ।

रहन-सहन खान-पानमे एकदम रईसी । लत्ता-कपड़ा एकदम स्फीत, समयक बन्धनमे एकदम जकड़ल । कतहु रहताह, बाट टाकेँ छोड़ि केहनो असुविधाजनक स्थानमे नियत समयपर नित्य कृत्य कऽ निर्धारित समयपर उपस्थित । सतत एक टा मौलिक चिन्तनमे निरत । यात्राक हेतु पृथक एक टा सेट, जाहिमे तोसक पर्यन्त । गंजी चारि टासँ कम संगमे नहि । तेल, साबुन, मंजन, इत्र । एम्हर आवि खड्ड पहरिऽ लागल छलाह, ताहिसँ पहिने मटकाक कुर्तामे भाइक गोर रतरत देह एक आभाक संग जे चमकि उठैत छलनि, से कतेको पँच लोककेँ देखने छी,

अश्रु तर्पण

श्रीचन्द्रनाथ मिश्र अमर

ओ चमक कहाँ । जाबत पान खाइत छलाह ताबत संगमे जे पानक विन्यास रहैत छलनि से जे हुनका सम्पर्कमे रहल होयताह सँह कहि सकैत छथि । अपन समस्त गतिविधिसँ अपन समस्त मित्र मण्डलकेँ अवगत राखब । एतनीयो टा बातमे कोनो संशय भेल तेँ ताहि संशयक निवारण-पार्थ तुरन्त पत्र ठोकि देवामे कनेको आलस्कर नहि । ककरो पत्र पहुँचल, पढ़ि कऽ तुरन्त ओ उत्तर लिखि देब हुनक स्वाभाविक प्रवृत्ति छलनि ।

किसुन जीक सम्पर्कमे जतेक साहित्यिक अनुष्ठान, आन्दोलन ओ गतिविधिमे रहि चुकल छी सब टाक संस्मरण तेँ एक विशाल ग्रन्थ भऽ जायत ततेक प्रकाशनक अवकाश कहाँ । पहिले भेंट जे अछि से अपनाते पूर्ण रोचक एक आख्यान ।

एक बेरक घटना स्मरण होइत अछि । प्रायः १९४४ ई० छलैक । आरामे विहार प्रान्तीय शिक्षक संघक अधिवेशन छलैक । भाइक पत्र पहुँचल—‘आरा जयबाक मार्गमे हम दरभंगा होइत जयबाक निश्चय कयलहुँ अछि । अमुक गाडीसँ दरभंगा पहुँचब, फर्ला फर्ला काज करब आ रातक गाडीसँ दुनु भाइ पटनाक हेतु चलि पड़ब । तैयार रहिहऽ ।’ भाइ नियत समयपर आवि गेलाह । काजो सब भऽ गेलनि । दिनमे भरि पोख हमरा डेरापर सुतलाह । हमरा अर्द्ध-वार्षिक परीक्षाक परीक्षाफल प्रकाशित करबाक छल । तेँ दिन भरि अत्यन्त व्यस्त रहलहुँ । पर्वान्ति केँ कहय अपराह्णमे स्कूलेमे बीतल । रातिमे जल्दी-जल्दी मोटरी-चोटरी बान्हि पहलेजावाली गाडी पकड़बाक हेतु उद्यत भेलहुँ । चलैत काल भाइकेँ की मोन भेलनि, कहलनि—आइ सात वर्षसँ तोरासँ परिचय अछि मुदा आइ धरि हाफ सट पहरिने तोरा नहि देखलियह अछि । आइ ई हमरवला हाफ सट पहरि कऽ चलह ।

भला भाइक इच्छाक पूर्ति कोना नहि कयल जाय । एक बेर कहलियनि जे शिक्षकक जीवन अंगीकार कयलाक बाद हम हाफ सटकेँ त्यागि देल । हाफसटमे व्यक्ति छुटन्न सन लगैत छँक । हमरा जतऽ धरि स्मरण अछि, तकर बादसँ ओ हाफ सट बनबोलनि नहि आ हाफ सट पहरि कऽ स्कूलो कहियो नहि गेलाह । किन्तु हमराधरि तत्काल ओ सट पहरिऽ पड़बे कयल । फलतः हम अपन कुर्ता ओ तीनो मोटरी फोलि राखऽ लगलहुँ तेँ कहलनि—लावह, हम अपने अटँचीमे घऽ दैत छिएक । दुनु भाइ चललहुँ । जाहि ठाम ठाढ़ होइ ताहिठाम ठिकिया कऽ देखथि आ अन्तमे कहलनि—भाइ वस्तुतः तोहर

(शेष २२ पृष्ठ)

प्राण अहुछिया काटि रहल अछि, कण्ठ अवरुद्ध अछि, वाणी कुंठित आ कलम भोथ । हम अकिंचन कौ कऽ सकैत छी ? हे विवंगत जन्मजन्मक बन्धु ! स्वीकार करू ई अश्रुतर्पण !

एहि कथनमे विरोधाभास प्रतीत होइछ जे भारतवर्ष जतऽ एक दिस प्राकृतिक सम्पत्तिक भंडार स्थल थिक ओतऽ दोसर दिस अत्यन्त आवश्यकीय सामग्री लेल विदेशपर अवलम्बित रहैत आयल अछि ।

प्राकृतिक सम्पत्तिके देखैत ई तँ एक छोट छीन महादेश थिक । जेम्हरे देखैत छी एकर प्राकृतिक उपादान सुसम्पन्न प्रतीत होइछ । उत्तरमे हिमालयक पर्वतीय प्रदेश—ओ प्रदेश जकर आर्थिक मूल्यांकन कयलासँ स्पष्ट भऽ जाइछ जे ओकर महत्त्व कतेक बेसी अछि । मध्यमे गंगा-ब्रह्मपुत्रक विशाल हरित-भरित प्रदेश जतऽ बारहो मास विभिन्न प्रकारक फसिल मुस्की रहैछ । खनिज सम्पत्तिक लेल भारतीय भंडार अक्षुण्ण अछि । ई अनुमान कयल जाइछ जे वर्तमान खनिज भंडारसँ ओतेक बेसी औद्योगिक प्रतिष्ठान प्रतिष्ठित कयल जा सकैछ जे सम्पूर्ण एशिया-महादेशक लेल उचित मानल गेल अछि । मानवशक्ति जे उद्योगक सर्वाधिक आवश्यकीय उपादान थिक, भारतवर्षमे प्रचुर मात्रामे अछि । संगे पशुधनक कमी सेहो नहि अछि । एतावता ई स्पष्ट भऽ जाइछ जे भारतीय अर्थव्यवस्था प्राकृतिक उपादानक लेल पूर्ण सुसम्पन्न अछि, जाही लेल प्रसिद्ध अर्थशास्त्री प्रो. श्री एम. एल. डालिङ्गक कथन द्रष्टव्य थिक—“भारतक सम्बन्धमे सर्वाधिक ध्यानाकर्षक गण्य तँ ई अछि जे एहि ठामक भूमि उर्वर अछि, किन्तु जनता निर्धन अछि ।”

वास्तवमे ई जे प्राकृतिक विपुलतामे मानवक निर्धनता एक बुझौअल बुझाइछ । ई तँ वास्तवमे बड़ आश्चर्यक विषय जे एतेक बेसी प्राकृतिक सामग्री रहितो भारत एक निर्धन अकिंचन देश अछि । बेसी गोटे तँ एतऽ एहने छथि जनिका भरिपोख भोजनो भेटव दुष्कर छनि । ई स्पष्ट होइत अछि प्रसिद्ध चिकित्सा विभागक वेत्ता सर जॉन मेगाक सर्वेक्षणसँ । हुनका अनुमानसँ भारतीय जनताक मात्र ३६ प्रतिशतकेँ संतुलित भोजन, ४१ प्रतिशतकेँ कम पुष्टिकारक भोजन ओ बकिये १६ प्रतिशतकेँ अत्यन्त कम पुष्टिकारक भोजन भेटैत छनि । यद्यपि ई अनुमान १९३३ मे कयल गेल छल, मुदा स्वतंत्रता प्राप्तिक तँ इस वर्षक वादो स्थिति ओहने अछि ।

भारतक प्राकृतिक सम्पदा वास्तवमे विशाल एवं बहुमुखी अछि, जकर स्पष्टीकरण निम्नांकित तर्कक आधारपर कयल जाइछ—

खनिज पदार्थ—वर्तमान औद्योगिक युगमे खनिज सम्पत्तिक स्थान महत्त्वपूर्ण अछि । खानसँ विभिन्न उद्योगकेँ संचालित करवा लेल सामान प्राप्त होइछ । इंग्लैण्ड, जर्मनी, अमेरिका तथा रूसक द्रुतगतिसेँ औद्योगिक विकासक मूलमे खनिज पदार्थक प्रचुरता अछि । किछु खनिज तँ एहन अछि जकर उत्पादन करवामे भारतकेँ विश्वमे उच्च स्थान प्राप्त छैक यथा—अवरख, लोहा, मैंगनीज, बौक्साइट, मोनाजाइट, इल्मेनाइट ।

औद्योगीय युगमे मुख्यतः कोइला ओ लोहा खनिज पदार्थक नाम अबैछ जे अपना देशमे पर्याप्त मात्रामे पाओल जाइछ । दुनु खनिज पदार्थक अनुमानित राशि क्रमशः २४० करोड़ तथा १२,१३६ करोड़ मेट्रिक टन अछि । एतऽ पाओल गेनिहार लोहा ओ कोइला उच्च कोटिक होइछ ।

वन-सम्पदा—प्राकृतिक सम्पत्तिमे वनक स्थान सेहो पूर्ण महत्त्वपूर्ण अछि । यद्यपि आवश्यकतानुसार वन नहि अछि (उचित वनक क्षेत्रफल ३३.१/१ भारतमे वनक क्षेत्रफल २२.१/१) तथापि परिस्थितिकेँ ध्यानमे रखैत ई मात्रा संतोषजनक कहि सकैत छी । भारतीय वनक महत्त्व एहिमे पाओल जाइवला विभिन्न लकड़ी ओ ओकर उच्च कोटिक कारणेँ सेहो अछि ।

भूमि ओ भौगोलिक स्थिति—भारतमे कृषि योग्य भूमिक सेहो कमी नहि अछि । यद्यपि देशक सम्पूर्ण भौगोलिक क्षेत्रफल ३२.६३ करोड़ हेक्टर अछि, मुदा आँकड़ा उपलब्ध अछि मात्र २६.५५ करोड़ हेक्टर भूमिक । ताहिमे कृषित भूमि अछि १३.७५ करोड़ हेक्टर भूमि । ई क्षेत्रफल वास्तवमे

भारतक प्रमुख आर्थिक समस्या यह अछि जे प्रचुरतामे निर्धनताआ तँ तँ भारतवर्षकेँ एकटा अर्थशास्त्री निर्धन वर्गसँ बसल एक समृद्ध राष्ट्र कहलनि अछि ।

भारतीय अर्थव्यवस्था

एक विरोधाभास

प्रोफेसर श्री योगेशचन्द्र मिश्र

पूर्ण संतोषजनक अछि । भारतमे प्रति व्यक्ति भूमिक क्षेत्रफल सेहो पूर्ण उचित कहि सकैत छी, तकर स्पष्टीकरण निम्नांकित तालिकासँ होइछ—

देश	—	प्रति व्यक्ति कृषियोग्य भूमि (एकड़मे)
भारत	—	०.५२
इंग्लैण्ड	—	०.४२
जर्मनी	—	०.४५
जापान	—	०.१७

एतबे नहि, विश्वक मानचित्रमे भारतक स्थान एहन ठाम अवस्थित अछि, जतऽ वाणिज्य, व्यापार, ओ आवागमनक सुविधा अछि । तँ ने संसारक दुनु गुटक राष्ट्र एकरा दिस एकटक लगौने छथि ।

मानव शक्ति—देशक विकासमे जनशक्तिक स्थान सेहो महत्त्वपूर्ण अछि । इंग्लैण्ड ओ अमेरिका सन समृद्धशाली राष्ट्र एकर साक्षी अछि जे जनाभाव कोनो देशक आर्थिक विकासकेँ कतेक प्रभावित करैत छैक । भारत एहि दृष्टिसेँ परम भाग्यशाली राष्ट्र अछि । सम्प्रति तँ एकर जनसंख्या ५३ कोटिक करीब अछि, जकर अनुदान विकासक लेल अक्षुण्ण मानल जाइछ ।

शक्ति-साधन—शक्तिक साधन महत्त्व देशक विकासमे परमावश्यक मानल गेल अछि, तँ ने तँ एकरा औद्योगीकरणक शोणित कहल गेल अछि । एहि दृष्टिसेँ भारतक स्थान परम महत्त्वपूर्ण अछि, कारण एतऽ शक्तिक विभिन्न साधन यथा कोइला, जलविद्युत्, मोनाजाइट, इल्मेनाइटक प्रचुर भंडार अछि ।

एतावता ई तँ प्रमाणित भऽ जाइछ जे भारत एहन भाग्यशाली देश अछि जकरापर प्रकृतिक महान कृपा छनि । मुदा विरोधाभास तँ तखन बुझना जाइछ, जखन कि एतऽ निर्धनता नग्न नृत्य करैत दृष्टिगत होइछ आ विश्व एकरा एक गरीब राष्ट्र मानने अछि ।

प्रश्न आवै ई अछि जे प्रचुर प्राकृतिक सम्पत्तिक देश भारतमे ई निर्धनता किकए—उपर्युक्त जटिल प्रश्नक उत्तरमे निम्नांकित तर्क देल गेल अछि ।

प्रति व्यक्ति आयक अपर्याप्तता—भारतकेँ निर्धन राष्ट्रक सम्बोधन देबाक सर्वप्रथम तर्क ई अछि जे एतऽ प्रति व्यक्ति आय विश्वक अन्य समुन्नत एवं सुविकसित देशक अपेक्षा कम अछि । भारतक प्रति व्यक्ति आयक तुलनामे संयुक्त राज्य अमेरिकाक प्रति व्यक्ति आय ३४ गुना, कनाडाक २० गुना तथा ब्रिटेनक १७ गुना बेसी अछि । ई थिक भारतीय निम्न जीवन-स्तरक प्रबल प्रमाण ।

राष्ट्रिय आयक विषम वितरण

दोसर तर्क ई अछि एतऽ धन ओ आयक वितरणमे महान विषमता अछि । एतऽ ई विचित्र बात अछि जे राष्ट्रिय आयक करीब ७०.१/१ भाग देशक मात्र १०.१/१ जनताक अधिकारमे केन्द्रित अछि आ बाँकी ३०.१/१ राष्ट्रिय आयक अधिकारी छथि देशक ६०.१/१ जनता । एवंप्रकारेण देशक बहुसंख्यक जनसंख्याक सम्बन्ध निर्धनतासँ अछि ।

उपभोगक निम्नस्तर

भारतवासीक जीवनस्तर अत्यन्त निम्न अछि जेकर प्रमाणस्वरूप ई कहल जा सकैछ जे विभिन्न उपभोगक वस्तुक उपयोग अत्यन्त निम्न अछि ।

संतुलित भोजनक अभाव—प्रसिद्ध चिकित्साशास्त्रीविद् सर जॉन मेगाक कहव छनि जे भारतमे ६५/१ जनसंख्याकेँ संतुलित भोजन नहि नसीब होइत छनि । एक मनुष्यक लेल प्रति दिनक भोजनमे ३,००० कैलरीजक आवश्यकता मानल गेल अछि, जखन कि एक भारतीयक भोजनमे (औसतन) प्रति दिन मात्र १६४० कैलरीज पाओल जाइछ ।

पन्द्रह अगस्त

: श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' :

झुलझुल पावसकेर मचकीपर बैसल ई पन्द्रह अगस्त अछि
मनुजताक मनकेर मनोरथ
मनुजक कारण भने भग्न हो
फलित न दलितक यदि आकांक्षा
के पुनि की उत्सव निमग्न हो
सुधा कलश भरने ई वसुधा-श्रमसीकर बिनु आइ व्यस्त अछि
पुनि पहुँचल पल भरिक हेतु ई
पुण्य-पर्व सन्देश सुनाबय
जन-जनमे अन्तर्हित शक्तिक
एक-एक उपयोग जनाबय
जन-कल्याणक लक्ष्य-शिखर धरि पहुँचक पथ एखनहुँसिकस्त अछि
पर-अवलम्बित जीवन भोगव
पौरुषकेर अपमान मानिकऽ
'काल-चक्र संकेत करै' अछि
करी काज सभ चीन्हि जानिक
राष्ट्रक नव-निर्माण करक हित अपन बनाओल पथ प्रशस्त अछि
गाम गाम आ नगर नगरमे
नव उत्साहक भाव जगाबय
गली-गली, आड-न-आड-नसँ
दुख दारिद्र्य अभाव भगाबय
राष्ट्रक सार्वभौम सत्ता जनताक हाथमे भेल न्यस्त अछि
अपने कर्मक भोगि सुफल वा
कुफल मनुष्यक जीवन बीतय
तखन अभागल होयत एहन के
अपन नोरमे अपने तीतय
जखन मनुष्यक बुद्धिक भयसँ प्रकृतिक पाँचो तत्त्व अस्त अछि
कृषक - श्रमिक धरती माताकेर
आइ उतारथु फेर आरती
मुखक मृदुल मुस्कान मुखर हो
महामन्त्र बनि 'जयति भारती'
पलमे बैन्य पड़ाय सकै' अछि स्वयं प्रकृति जे मुक्त-हस्त अछि
भारतीयकेर हृदय-कुहरमे
भारतीयता गौरव जागय
भारत माताकेर आँचरमे
निष्क्रियताकेर दाग न लागय
विजय-दिवस पुनि देखय आयल के सक्रिय आ के उदस्त अछि